Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 09, (फरवरी, 2026)
पृष्ठ संख्या 36–37

पाइनबेरी: एक उभरती हुई नयी फसल के रूप में

अमन श्रीवास्तव[1] एवं शिवम मौर्य[2]

[1]सहायक प्राध्यापक और [2]परास्नातक छात्र
उद्यान विज्ञान विभाग, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

Email Id: – shivamm9076@gmail.com

परिचय

पाइनबेरी, स्ट्रॉबेरी (*फ्रैगरिया अनानासा*) की एक विशिष्ट प्रजाति है, जिसका फल परिपक्व अवस्था में सफेद अथवा क्रीमी रंग का तथा बीज हल्के लाल होते हैं। स्वाद की दृष्टि से यह स्ट्रॉबेरी और अनानास का मिश्रण की तरह लगता है, इसलिए इसे "पाइनबेरी" नाम दिया गया है। यह पौधा शाकीय, बहुवर्षीय, रोजेसी कुल का सदस्य है। पारंपरिक स्ट्रॉबेरी की अपेक्षा इसका उत्पादन सीमित है, किंतु उच्च मूल्य बाजार में इसकी मांग निरंतर बढ़ रही है। पोषण की दृष्टि से इसमें विटामिन C, फेनोलिक यौगिक और रेशे प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, जिससे यह न केवल ताजे फल के रूप में बल्कि औषधीय और प्रसंस्करण उद्योग में भी इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है।

उत्पत्ति

इसकी उत्पत्ति का इतिहास स्ट्रॉबेरी के संकरण से जुड़ा हुआ है। आधुनिक स्ट्रॉबेरी 18वीं शताब्दी में उत्तरी अमेरिका की फ्रेगेरीआ वर्जिनिआना और दक्षिण अमेरिका की फ्रैगरिया चिलोएंसिस के संकरण से विकसित हुई थी। फ्रैगरिया चिलोएंसिस की श्वेत–फलित विशेषता आगे चलकर पाइनबेरी में सुरक्षित रह गई। दक्षिण अमेरिकी देशों, विशेषकर चिली और ब्राजील में पाए जाने वाले सफेद फलों को इसका मूल स्रोत माना जाता है। यूरोप में 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में वैज्ञानिकों ने इस विलुप्तप्राय किस्म को पुनः संकरित कर व्यावसायिक रूप दिया। नीदरलैंड और जर्मनी ने ग्रीनहाउस आधारित प्रणालियों के माध्यम से इसका संरक्षण और उत्पादन प्रारंभ किया, जिसके परिणामस्वरूप यह बाजार में एक नई फसल के रूप में विकसित हुई।

वनस्पति विशेषताएँ

यह एक छोटा शाकीय पौधा है जिसकी ऊँचाई 15–25 सेंटीमीटर तक तथा पत्तियाँ त्रिपत्री व गहरे हरे रंग की होती हैं। पौधा रनर उत्पन्न कर शाकीय प्रवर्धन करता है। इसके फूल द्विलिंगी, सफेद रंग के और मध्यम आकार के होते हैं। फल तकनीकी दृष्टि से एक संयुक्त बहुफलीय संरचना है, जिसमें बीज सतह पर स्थित रहते हैं। इसकी सुगंध और स्वाद में अनानास जैसा आभास मिलता है, जो इसे विशिष्ट पहचान प्रदान करता है।

औषधीय गुण

इसमे पाये जाने वाले फ्लावोनॉयड्स और फेनोलिक यौगिक रक्त में कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रित करने तथा रक्तचाप को संतुलित रखने में सहायक होते हैं। इसमें उपस्थित एंटीऑक्सीडेंट में कैंसर को निष्क्रिय करने की क्षमता होती है तथा विटामिन ६ और एंटीऑक्सीडेंट त्वचा स्वास्थ्य के लिए भी अत्यंत लाभकारी हैं।

जलवायु

पाइनबेरी की अच्छी खेती के लिए 15–25 C तापमान और 70–80 प्रतिशत सापेक्षिक आर्द्रता सबसे उपयुक्त मानी जाती है। अत्यधिक गर्मी (35 C से अधिक) और अधिक शीत दोनों ही पौधों को हानि पहुँचाते हैं। पाले की स्थिति में

पुष्प कलियाँ नष्ट हो जाती हैं। इसलिए इसे समशीतोष्ण क्षेत्रों या संरक्षित प्रणाली जैसे पॉलीहाउस और ग्रीनहाउस में लगाना अच्छा माना जाता है।

मृदा

इसकी खेती के लिए हल्की, उपजाऊ और कार्बनिक पदार्थों से भरपूर बलुई दोमट अथवा दोमट मृदा जिसमें जल निकास उत्तम हो तथा पी. एच. 5.5–6.5 हो, उपयुक्त मानी जाती है। जलभराव की स्थिति में जड़ सड़न की समस्या उत्पन्न हो जाती है।

प्रवर्धन एवं रोपण

इसका प्रवर्धन रनर के माध्यम से होता है इसके लिए स्वस्थ मातृ पौधों से निकलने हुए रनर को नर्सरी में रोपकर मुख्य खेत में स्थानांतरित किया जाता है। रोपण का समय शीत ऋतु की शुरुआत उपयुक्त होता है। जिसमें कतार से कतार की दूरी 30–40 सेंटीमीटर और पौधे से पौधे की दूरी 20–25 सेंटीमीटर रखना चाहिए जिससे अच्छे विकास के लिए पौधों को पर्याप्त प्रकाश और वायु संचार मिल सके।

पोषण प्रबंधन

रोपण से पहले खेत में 20–25 टन प्रति हेक्टेयर गोबर की खाद डालनी चाहिए तथा इसकी खेती के लिए औसतन 80–100 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60–70 किलोग्राम फॉस्फोरस और 80–100 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर कि संस्तुति कि जाती है। नाइट्रोजन को तीन भागों में विभाजित कर 30, 60 और 90 दिन के अंतराल पर प्रयोग किया जाना उपयुक्त होता है। सूक्ष्म पोषक तत्व जैसे जिंक और बोरोन के छिड़काव से फल का आकार और गुणवत्ता अच्छी होती है।

सिंचाई प्रबंधन

इसके पौधों को सतत नमी की जरूरत पड़ती है। अधिक शुष्कता से फल छोटे व कठोर हो जाते हैं जबकि जलभराव से जड़ सड़न रोग उत्पन्न होता है। ड्रिप सिंचाई प्रणाली सबसे उपयुक्त मानी जाती है क्योंकि इस विधि पानी और घुलनशील उर्वरक सीधे जड़ क्षेत्र में दिए जा सकते है।

पुष्पन एवं फलन

रोपण के लगभग 40–50 दिन बाद पौधों में पुष्पन प्रारंभ हो जाता है। इसके फूल द्विलिंगी और परागणक्षम होते हैं। ग्रीनहाउस आधारित प्रणालियों में परागण के लिए मधुमक्खियों अथवा कृत्रिम परागण तकनीक का उपयोग किया जाता है। पुष्पन के बाद फल पकने में 30–40 दिन का समय लगता है।

प्रमुख रोग

पाइनबेरी का सबसे प्रमुख रोग ग्रे मोल्ड है, जो विशेषकर फलन अवस्था में आर्द्र वातावरण के कारण फैलता है। इसके अलावा पाउडरी मिल्ड्यू और पर्णदाग रोग भी देखने को मिलते हैं। इनसे बचाव के लिए रोगमुक्त पौध सामग्री का चयन, उचित पौध दूरी, संक्रमित पौधों को हटाना और संतुलित फफूंदनाशी का छिड़काव आवश्यक होता है।

प्रमुख कीट

इस फसल में एफिड, थ्रिप्स और फलभक्षी कीट प्रमुख हैं। ये पौधों का रस चूसकर उनकी वृद्धि को बाधित करते हैं और कभी–कभी वायरल रोगों के वाहक के रूप में भी काम करते हैं। इनकी रोकथाम के लिए समन्वित कीट प्रबंधन तकनीकें अपनाई जाती है, जैसे पीले चिपचिपे ट्रैप, जैविक परभक्षी कीटों का उपयोग और आवश्यकतानुसार कीटनाशक का सीमित प्रयोग करना चाहिए।